प्रवाह
निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

अंतरराष्ट्रीय संबंधों के लिए बहुत ही सुलझे हुए और गुणवान नेता की जरूरत होती है। -जॉन मोट

आज से भारतीय रिजर्व बैंक की कमान संभाल रहे नए गवर्नर संजय मल्होत्रा के लिए सबसे बड़ी चुनौती उन कसौटियों पर खरा उतरने की होगी, जो उनके पूर्ववर्ती गवर्नर शक्तिकांत दास ने बेहद प्रतिकूल बाह्य व आंतरिक परिस्थितियों में अपने सटीक और संतुलित निर्णयों से स्थापित की हैं।

खरा उतरने की चुनौती

कई अवसरों पर देश के वित्तीय तंत्र को मुश्किलों से बचाने वाले रिजर्व बैंक के पच्चीसवें गवर्नर शक्तिकांत दास को एक और कार्यकाल मिलने की अटकलें जरूर लगाई जा रही थीं, लेकिन नए गवर्नर के तौर पर संजय मल्होत्रा के नाम की घोषणा के साथ ही उन पर विराम लग गया है, जो आज से केंद्रीय बैंक की कमान संभालेंगे। व्यक्तिगत कारणों से उर्जित पटेल के एकाएक इस्तीफा देने के बाद दिसंबर, 2018 में शक्तिकांत दास केंद्रीय बैंक के गवर्नर बने थे। गवर्नर के रूप में एक ओर तो उन्होंने कोविड महामारी के आर्थिक प्रभावों से निपटने में सराहनीय भूमिका निभाई, तो दूसरी तरफ, रूस-यूक्रेन और इस्राइल-हमास के युद्धों से उपजी आर्थिक चुनौतियों से भी वह कुशलतापूर्वक निपटे। इन चुनौतियों से पार पाने के लिए केंद्रीय बैंक ने जो कदम उठाए, वे बेशक एक नियत समय के लिए थे, लेकिन उसके बाद भी अगर बाजार में कोई उथल-पुथल नहीं दिखी, तो इसका श्रेय शक्तिकांत दास को ही जाना चाहिए। रिजर्व बैंक के किसी गवर्नर के प्रदर्शन के विश्लेषण का सबसे महत्वपूर्ण पैमाना यह होता है कि उसने महंगाई से निपटने के लिए क्या किया। इस मोर्चे पर उनकी कामयाबी इस तथ्य में देखी जा सकती है कि उनके छह वर्ष के कार्यकाल में सिर्फ एक बार जनवरी से सितंबर, 2022 में ऐसा हुआ, जब लगातार तीन तिमाहियों तक महंगाई छह फीसदी के दायरे से ऊपर रही, जिसके लिए रिजर्व बैंक को सरकार के समक्ष बाकायदा स्पष्टीकरण भी देना पड़ा था। शक्तिकांत दास ने जीएसटी की शुरुआत में तो महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ही, डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देने और डिजिटल मुद्रा की शुरुआत जैसे प्रयोगों को बखूबी अंजाम दिया। अमेरिका की *ग्लोबल फाइनेंस* पत्रिका ने दो बार उन्हें सर्वश्रेष्ठ केंद्रीय बैंकर घोषित किया, जो अपने आप में एक बड़ी बात है। इस संदर्भ में नए गवर्नर संजय मल्होत्रा के लिए चुनौती यह होगी कि उनके ऊपर शुरुआत से ही सबकी नजर रहेगी। वह ऐसे वक्त में केंद्रीय बैंक की कमान संभालने जा रहे हैं, जब चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में आर्थिक वृद्धि दर घटकर सात तिमाहियों में सबसे कम 5.4 फीसदी रह गई है और अर्थव्यवस्था में तेजी लाने के लिए ब्याज दरों में कटौती का चारों तरफ से दबाव बढ़ रहा है। इसके अतिरिक्त, दो बड़े युद्धों व वैश्विक मंदी जैसे बाहरी कारकों का निर्यात पर जो असर पड़ रहा है, उसने भी केंद्रीय बैंक की चिंताएं बढ़ाई हैं। ऐसे में, डॉलर के मुकाबले रुपये में आ रही गिरावट को थामने के प्रयास तो उन्हें करने ही होंगे, लेकिन उनकी असल परीक्षा इससे होगी कि वह महंगाई से कैसे निपटते हैं।

यूनुस से ज्यादा उम्मीद मत रखिए

शेख हसीना के दौर में भारत व बांग्लादेश के रिश्ते तेजी से मजबूत हुए थे, लेकिन अब वहां अल्पसंख्यकों के साथ जिस तरह की बर्बरता हो रही है, उससे दोनों देशों के बीच रिश्तों में कड़वाहट आई है। ढाका व दिल्ली ऐतिहासिक रूप से बेशक सहयोगी रहे हों, लेकिन फौज का मोहरा बने यूनुस से ज्यादा उम्मीदें लगाना शायद बेमानी होगा।

आनंद कुमार
एसोसिएट फेलो
एमपी-आईडीएसए

भारत और बांग्लादेश के रिश्ते ऐतिहासिक रूप से सहयोगात्मक रहे हैं, लेकिन अल्पसंख्यकों के अधिकारों और कूटनीतिक संघर्षों से जुड़ी घटनाओं की वजह से तेजी से खराब हो गए हैं। पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना द्वारा भारत से शरण मांगने के बाद और बांग्लादेश में हिंदू अल्पसंख्यकों के साथ दुर्व्यवहार के आरोपों और भारत में बांग्लादेशी मिशन पर हाल ही में हुए हमले से तनाव और बढ़ गए हैं। बीते 30 नवंबर को ढाका से होकर जाने वाली अगरतला-कोलकाता बस पर बांग्लादेश में हमला हुआ, जिससे दोनों मुल्कों के बीच तनाव बढ़ गया। जवाबी कार्रवाई में, दो दिसंबर को त्रिपुरा के अगरतला में बांग्लादेशी मिशन पर हमला किया गया, जिसके बाद ढाका ने तीखी प्रतिक्रिया जताई।

बांग्लादेश ने वियना संधि (1961) के उल्लंघन का हवाला देते हुए भारतीय दूत को तलब किया, जो मेजबान देशों को राजनयिक परिसर की सुरक्षा करने के लिए बाध्य करता है। हालांकि भारत ने इस घटना पर खेद जताते हुए सात लोगों को गिरफ्तार किया और लापरवाही के लिए तीन पुलिस अधिकारियों को निलंबित कर दिया। लेकिन स्थिति तब और बिगड़ गई, जब बांग्लादेश ने अगरतला और कोलकाता से अपने मिशन प्रमुखों को वापस बुला लिया। यह ढाका और नई दिल्ली के बीच बढ़ते तनाव को दर्शाता है।

इससे पहले प्रमुख हिंदू धार्मिक नेता और अल्पसंख्यक अधिकारों के मुखर समर्थक चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी से स्थिति और भी खराब हो गई। दास को कथित तौर पर देशद्रोह के आरोप में हिरासत में लिया गया था। आरोप स्पष्ट न होने के बावजूद उन्हें जमानत नहीं दी गई, जिससे पूरे भारत में विरोध प्रदर्शन भड़क उठे और बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के साथ व्यवहार को लेकर चिंताएं बढ़ गईं। खबरें बताती हैं कि शेख हसीना सरकार के सत्ता से बाहर होने के बाद से बांग्लादेश में हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों के खिलाफ 2,000 से ज्यादा हमले हुए हैं, जिनमें आगजनी, लूटपाट, मंदिरों में तोड़फोड़ और देवताओं का अपमान शामिल है। भारत ने खेद व्यक्त करते हुए कहा कि इन हमलों के अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई

करने के बजाय, बांग्लादेशी अधिकारियों ने शांतिपूर्ण मांग करने वाले एक धार्मिक नेता को निशाना बनाया है।

नई दिल्ली ने दास के खिलाफ आरोपों की आलोचना करते हुए इसे अन्यायपूर्ण बताया और अल्पसंख्यक समुदायों के अधिकारों की रक्षा के लिए तत्काल कार्रवाई की मांग की। भारत की चिंताओं को दूर करने के बजाय, ढाका ने इन मुद्दों को 'आंतरिक मामला' बताकर खारिज कर दिया। बांग्लादेशी सरकार ने भारत के बयानों को 'दोनों देशों के बीच मित्रता और समझ की भावना के विपरीत' बताया। पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना ने भी चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी की कड़ी निंदा की है और मौजूदा सरकार से अल्पसंख्यकों के जीवन और संपत्ति की सुरक्षा के लिए त्वरित कदम उठाने का आग्रह किया। इस कूटनीतिक गतिरोध ने भारत-बांग्लादेश संबंधों के भविष्य को लेकर चिंताएं बढ़ा दी हैं।

बांग्लादेश की राजनीति शुरू से विभाजित रही है। वहां की मुक्ति-विरोधी ताकतें हमेशा से ही भारत विरोधी रही हैं। सत्ता से शेख हसीना को हटाए जाने के बाद बांग्लादेश में भारत विरोधी भावनाएं बढ़ गई हैं। भारत में रह रहीं हसीना ने मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार की आलोचना करते हुए उन पर 'नरसंहार' में शामिल होने का आरोप भी लगाया है। बदले में यूनुस सरकार ने हसीना के प्रत्यर्पण की मांग की है, जिसने दरार को और गहरा कर दिया है। ढाका ने नई दिल्ली पर मामले को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने का आरोप लगाया है। यूनुस प्रशासन का दावा है कि हिंदुओं सहित सभी अल्पसंख्यक हसीना के कार्यकाल की तुलना में अंतरिम सरकार में बेहतर ढंग से संरक्षित हैं। बिगड़ते रिश्ते दोनों मुल्कों के मजबूत आर्थिक और सुरक्षा संबंधों को कमजोर करने का खतरा पैदा करते हैं।

भारत-बांग्लादेश व्यापार 2023-24 में 14 अरब डॉलर तक पहुंच गया, लेकिन हालिया राजनयिक और धार्मिक तनाव इन उपलब्धियों को बाधित करने वाले हैं। भारतीय दूत प्रणय वर्मा ने हाल ही में बांग्लादेश के कार्यवाहक विदेश सचिव रियाज हमीदुल्लाह से मुलाकात की, जिसमें उन्होंने भारत-बांग्लादेश संबंधों की बहुआयामी प्रकृति और संवाद बनाए रखने की जरूरत पर जोर दिया। दोनों पक्षों ने मौजूदा चुनौतियों के बावजूद व्यापार, सुरक्षा और जल-बंटवारे जैसे क्षेत्रों में सहयोग के महत्व को स्वीकार किया। वहीं, भारतीय विदेश सचिव विक्रम मिस्री नौ दिसंबर को बांग्लादेश दौरे पर पहुंचे और वहां विदेश सचिव व अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार मोहम्मद यूनुस से मिलकर हिंदुओं और अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने को लेकर बात की। बांग्लादेश में बढ़ते धार्मिक तनाव पर पश्चिमी नेताओं ने भी चिंता व्यक्त की है। अमेरिकी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता मार्गरेट मैकलियोड ने कहा कि अमेरिका स्थिति पर बारीकी से नजर रख रहा है और ढाका में अंतरिम सरकार को अल्पसंख्यक समुदायों में बढ़ती असुरक्षा को दूर करने और मौलिक अधिकारों को बनाए रखने के लिए तत्काल कदम उठाने का आग्रह किया है।

हालांकि, कई वैश्विक संकटों और राजनीतिक बदलावों के कारण अमेरिका और ब्रिटेन जैसे देशों द्वारा महत्वपूर्ण हस्तक्षेप की संभावना नहीं है। इसके बजाय, उनकी भूमिका बांग्लादेश की लोकतांत्रिक संस्थाओं का समर्थन करने पर केंद्रित हो सकती है, जो परोक्ष रूप से भारत-बांग्लादेश संबंधों को स्थिर कर सकती है। बढ़ते अविश्वास के बावजूद दोनों देशों ने विवादों को सुलझाने की इच्छा का संकेत देते हुए संवाद के रास्ते खुले रखे हैं। फौज की अंगुलियों पर खेल रहे यूनुस से ज्यादा उम्मीदें तो वैसे भी नहीं हैं, लेकिन उन्होंने व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाने के आह्वान की औपचारिकता तो की ही है, उन्होंने दोनों देशों से दीर्घकालिक हितों को प्राथमिकता देने का भी आग्रह किया है। भारत की 'पड़ोसी पहले' की नीति बांग्लादेश के साथ मजबूत संबंध बनाए रखने के महत्व को रेखांकित करती है। दोनों देश 4,000 किलोमीटर की सीमा साझा करते हैं और उनके बीच गहरे सांस्कृतिक और आर्थिक संबंध हैं। जैसा कि यूनुस ने कहा, 'दोनों देशों के बीच अर्थव्यवस्था, सुरक्षा और पानी के मुद्दे पर संबंध बहुत करीबी होने चाहिए। हमें उस दिशा में आगे बढ़ने के लिए अपनी पूरी शक्ति का उपयोग करना होगा।' शेख हसीना के कार्यकाल में द्विपक्षीय संबंध काफी बेहतर हुए, लेकिन मौजूदा स्थिति इन उपलब्धियों को उलटने का खतरा पैदा करती है। दोनों देशों को यह सुनिश्चित करते हुए कि शांति, स्थिरता और विकास की साझा आकांक्षाएं साझेदारी के केंद्र में बनी रहें, रिश्ते को बेहतर बनाने के लिए निर्णायक रूप से कार्य करना चाहिए।

edit@amarujala.com

जीवन धारा

स्वामी सत्यानंद

श्रीमद्भगवद्गीता को आत्मसात करने वाला कभी डगमगाता नहीं है। गांधीजी कहते थे कि अंग्रेजों से लोहा लेते हुए जब वह थक जाते हैं, तो वह गीता मां की गोद में चले जाते हैं और ऊर्जा हासिल कर फिर उठ खड़े होते हैं।

ऐसी धारणा करें, भगवान मुझे ही उपदेश दे रहे हैं

श्रीकृष्ण *भगवान के श्रीमद्भगवद्गीतारूप गीत बड़े सरल, अतिशय सुंदर, बहुत ही बलाढ्य, अतीव सारगर्भित और अत्यंत उत्तम हैं। उनमें सत्य का और तत्व ज्ञान का निरूपण अत्युत्तम प्रकार से किया गया है। उनके श्रवण, पठन, मनन और निश्चय करने से मनुष्य का अंतरात्मा अवश्यमेव जग जाता है, उसके चिदाकाश में सत्य का प्रकाश अवश्य ही चमक उठता है और उसका परम कल्याण होने में संदेह तक नहीं रह जाता। गीता के उपदेशामृत को भावना सहित पान कर लेने से भगवद्भक्त को परमेश्वर का परमधाम आप ही आप सुगमता से प्राप्त हो जाता है। श्रीमद्भगवद्गीता में कर्मयोग की बड़ी महिमा है। कर्मों के फलों में आशा न लगाकर कर्तव्यबुद्धि से कर्म करना कर्मयोग है।*

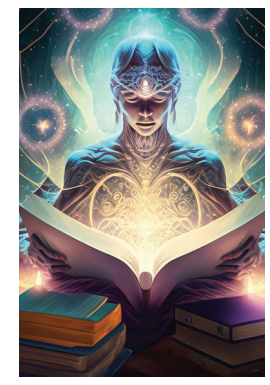

कर्तव्यों को करते हुए मोह में, ममता में तथा लालसा आदि में मग्न न हो जाना अनासक्ति है। अपने सारे कर्मों को, अपने ज्ञान-विज्ञान, तर्क-वितर्क और ममता सहित, मन, वचन, काया से श्रीभगवान की शरण में समर्पण कर देना, कर्तापन का अभिमान न करना और अपने आप सहित कर्ममात्र को विधाता की भक्ति की वेदी पर बलि बना देना भक्तिमय कर्मयोग, सच्चा संन्यास है। श्रीकृष्ण के समय में लोग ज्ञान और संन्यास को मतरूप मानते थे और कर्म की निंदा किया करते थे। इसलिए श्रीकष्ण ने कर्तव्य पालन पर अधिक बल दिया और कर्मत्याग का निषेध किया है। श्रीमद्भगवद्गीता को अपने जीवन में आत्मसात करने वाला व्यक्ति किसी भी परिस्थिति में डगमगाता नहीं है। महात्मा गांधी इसके सच्चे उदाहरण हैं। गांधीजी कहते थे कि अंग्रेजों से लोहा लेते हुए जब वह थक जाते हैं, तो वह गीता मां की गोद में विश्राम करने के लिए चले जाते हैं और फिर नई ऊर्जा हासिल कर उस शक्तिशाली सत्ता का सामना करने के लिए उठ खड़े होते हैं। गांधीजी अपनी नित्य प्रार्थना में श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित स्थितप्रज्ञ के लक्षणों को भी शामिल किया करते थे। श्रीमद्भगवद्गीता में सांख्य, पातंजल और वेदांत का समन्वय है। इसका पाठ करने वाले स्त्री-पुरुष को ऐसी धारणा बनानी चाहिए कि मैं अर्जुन हूं और मुझ में पाप, अपराध, अकर्मण्यता, कर्तव्यहीनता, कायरता, दुर्बलता आदि जो भी दुर्गण हैं, उनको जीतने के लिए श्रीकृष्ण भगवान मुझे ही उपदेश दे रहे हैं। मेरी ही आत्मा की अमरसत्ता को जगा रहे हैं। मेरे ही चैतन्य रूप का वर्णन कर रहे हैं और आलस्य रहित होकर, समबुद्धि से स्वकर्तव्य कर्म करने को मुझे ही प्रेरित, उत्तेजित तथा उत्साहित करने में तत्पर हैं। श्रीभगवान का मैं ही प्रिय शिष्य हूं, परमप्रिय भक्त हूं और श्रद्धालु श्रोता हूं। ऐसे उत्तम विचारों से गीता का पाठक भगवान की कृपा का पात्र बन जाता है और उसमें गीता का सार सहज से समाने लग जाता है। भगवान ने श्रीमुख से स्वयं कहा है कि गीता का पाठ करना और उसको सुनना-सुनाना ज्ञान यज्ञ है, उससे मैं पूजा जाता हूं। श्रीमद्भगवद्गीता में नारायणी गीता का भी पूरा प्रतिबिंब विद्यमान है। इसका अपना मौलिकपन भी महामधुर और मनमोहक है।

विश्वासी व श्रद्धावान बनें

सूत्र

श्रीमद्भगवद्गीता के पाठक को चाहिए कि वह विश्वासी और श्रद्धावान यजमान बनकर बड़े गंभीर भाव से इस यज्ञ को किया करे और इसको परमेश्वर का पुण्यरूप परम पूजन ही समझे। सत्य पथ को प्रदर्शित करने के लिए संसार भर में गीता एक अद्वितीय और अद्भुत ज्योति स्तंभ है।

दूसरा पहलू

राजधानी दिल्ली के संसद भवन की लाइब्रेरी से लेकर एशियन गेम्स विलेज तक के अनूठे वास्तुशिल्पी थे राज रेवाल।

दिल्ली की आत्मा का हिस्सा हैं उनकी बनाई इमारतें

राज रेवाल जब अपनी कार से राजधानी में एशियन गेम्स विलेज, संसद भवन पुस्तकालय, दिल्ली मेट्रो निगम मुख्यालय, ब्रिटिश उच्चायोग के फ्लैट्स, विश्व बैंक और ऐसे ही कई अन्य प्रतिष्ठित भवनों के पास से गुजरते हैं, तो ड्राइवर को गाड़ी की गति धीमी करने का निर्देश देते हैं। इन मार्गों से गुजरने में उन्हें अच्छा लगता है। उन्होंने दिल्ली, भारत और दुनिया भर में कई प्रतिष्ठित इमारतों को डिजाइन किया है। फ्रांस सरकार ने उन्हें आर्किटेक्चर के क्षेत्र में लगातार श्रेष्ठ काम करने के लिए सम्मानित भी किया।

उन्हें देश का सबसे प्रयोगधर्मी और बेहतरीन आर्किटेक्ट माना जाता है, जो लगातार नवाचार के लिए प्रयास करते हैं। उदाहरण के लिए, एशियाड विलेज को ले लीजिए, जो आज भी एक बिल्कुल नए, आधुनिक आवास परिसर की तरह दिखता है। इसमें 1982 के एशियाई खेलों में भाग लेने वाले एथलीट और अन्य लोग ठहरे थे। रेवाल ने इसे दिल्ली की गर्म जलवायु को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया था, जिसमें भूनिर्माण पर बहुत ध्यान दिया गया। उनका काम भारतीय शहरों के चरित्र को दर्शाता है। उन्होंने वास्तुकला की दुनिया में अपनी उपस्थिति हॉल ऑफ नेशंस के डिजाइन से दर्ज कराई थी। तब वह 40 वर्ष के भी नहीं थे। निस्संदेह, वह स्वतंत्र भारत की पहली पीढ़ी के सर्वश्रेष्ठ वास्तुकारों में से एक हैं, जिन्होंने पहली बार हॉल ऑफ नेशंस और प्रगति मैदान में नेहरू केंद्र की अपनी डिजाइनों से कला जगत का ध्यान आकृष्ट किया। दुख की बात है कि प्रगति मैदान के पुनर्विकास के दौरान दोनों को ध्वस्त कर दिया गया। इनके डिजाइन न्यूयॉर्क व पेरिस के कला संग्रहालयों में प्रदर्शित किए गए थे। इन्हें ध्वस्त किए जाने पर रेवाल निराश हुए थे।

फ्रांस सरकार ने रेवाल को आर्किटेक्चर के क्षेत्र में श्रेष्ठ काम करने के लिए सम्मानित किया। उन्हें सबसे प्रयोगधर्मी और बेहतरीन आर्किटेक्ट माना जाता है।

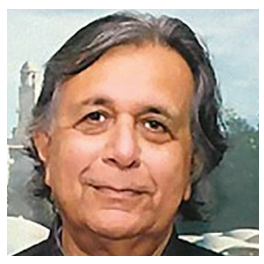

वह स्वतंत्र भारत की पहली पीढ़ी के सर्वश्रेष्ठ वास्तुकारों में से एक हैं, जिन्होंने पहली बार हॉल ऑफ नेशंस और प्रगति मैदान में नेहरू केंद्र की डिजाइनों से कला जगत का ध्यान आकृष्ट किया।

हॉल ऑफ नेशंस निस्संदेह आधुनिक वास्तुकला की उत्कृष्ट कृति थी, विशाल और राजसी। जाने-माने वास्तुकार बख्शीश सिंह और स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर में उनके छात्र कहते हैं, 'राज रेवाल ने दिल्ली में अपनी डिजाइन की इमारतों से अपनी स्थायी छाप छोड़ी है। उनका योगदान ईंटों और सीमेंट से परे है। उन्होंने ऐसी इमारतों का निर्माण किया है, जो शहर की आत्मा का हिस्सा बन चुकी हैं।' वह एक शानदार शिक्षक भी थे। राज रेवाल की इमारतों में सूरज का प्रकाश आता है। वह अक्सर स्थानीय स्तर पर प्राप्त सामग्री का उपयोग करते हैं, पारंपरिक निर्माण तकनीकों को समकालीन संवेदनाओं के साथ मिलाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप ऐसी इमारतें बनती हैं, जो सौंदर्यपूर्ण रूप से मनभावन और पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ, दोनों हैं। *-विवेक शुक्ला*

आंकड़े

डीजल की खपत

उद्योगों, वाहनों और खेती-बाड़ी समेत तमाम कामों के लिए बीते वित्त वर्ष में भारत में कुल 89,584.8 हजार मीट्रिक टन डीजल की खपत हुई।

उत्तर प्रदेश	10,307.6
महाराष्ट्र	9,926.7
कर्नाटक	8,350.6
गुजरात	7,178.7
तमिलनाडु	6,287.2

आंकड़े डीजल की खपत वाले राज्यों के, हजार मीट्रिक टन में | स्रोत : PPAC

आज मोक्षदा एकादशी है। इसी दिन भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश भी दिया था। भगवान ने युधिष्ठिर को भी इस तिथि का महत्व समझाया था।

मोक्षदा एकादशी

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष की एकादशी को मोक्षदा एकादशी कहते हैं। *पद्मपुराण* के अनुसार, भगवान श्रीकृष्ण धर्मराज युधिष्ठिर से कहते हैं कि इस दिन तुलसी की मंजरी, धूप-दीप आदि से भगवान दामोदर का पूजन करना चाहिए। मोक्षदा एकादशी बड़े-बड़े पातकों का नाश करने वाली है। इस दिन उपवास रखकर श्रीहरि के नाम का संकीर्तन, भक्तिगीत, नृत्य करते हुए रात्रि में जागरण करना चाहिए। मोक्षदा एकादशी का व्रत जो कोई भी करता है, उसके पितरों को मुक्ति मिल जाती है।

बताया जाता है कि प्राचीन काल में गोकुल राज्य के राजा वैखानस ने अपने पिता को नर्क से मुक्ति दिलाने के लिए मोक्षदा एकादशी का व्रत किया था और भगवान विष्णु की अराधना की थी। व्रत के प्रभाव से राजा के पिता को मुक्ति मिल गई थी। दरअसल, राजा ने एक सपना देखा था कि उसके पिता को नर्क में यातनाएं भोगनी पड़ रही हैं। यह देखकर राजा बहुत विचलित हो उठे। इसके बाद राजा ने पर्वत मुनि से अपने पिता को मुक्ति दिलाने का उपाय पूछा। पर्वत मुनि ने राजा को मोक्षदा एकादशी का व्रत और भगवान विष्णु की आराधना की सलाह दी। राजा ने वैसा ही किया, जिसके प्रभाव से उसके पिता को मुक्ति मिल गई। मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी के दिन ही कुरुक्षेत्र में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को *श्रीमद्भगवद्गीता* का उपदेश दिया था। इसलिए इस तिथि को गीता जयंती भी कहते हैं।

अंतर्यात्रा
संकलित

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 06 अक्तूबर, 1962

देश में अभी कीमतों पर कंट्रोल नहीं लगाया जाएगा

देश में अभी कीमतों पर कंट्रोल न लगाया जायगा
योजना आयोग लालफीता शाही के चक्कर में
भारत-नेपाली सीमा पर गंभीर स्थिति

भारत सरकार से अर्थशास्त्रियों ने यह सिफारिश की है कि अभी देश में चीजों पर कंट्रोल न लगाया जाए। फिलहाल छह से आठ महीने तक इस ओर कोई ठोस कदम उठाए जाने की संभावना नहीं दिखती।

2024 का औसत ताप एक चेतावनी है

इस साल बीते 123 वर्षों में न्यूनतम तापमान औसत से ज्यादा रहा है, जो भविष्य की विभीषिका की ओर संकेत कर रहा है।

पंकज चतुर्वेदी

पर्यावरण

वर्ष 2024 भारत के लिए बेहद गरम रहा। बीते 11 महीने औसतन न्यूनतम तापमान सामान्य से अधिक बना रहा। अनुमान है कि दिसंबर भी ऐसा ही बीतने वाला है। इस साल जुलाई, अगस्त, सितंबर और अक्तूबर के महीने तो ऐसे रहे, जब देश में उच्चतम औसत न्यूनतम तापमान का अनुभव किया गया। अक्तूबर में तो इसके सभी रिकॉर्ड टूट गए, जबकि सामान्य से 1.78 डिग्री सेल्सियस अधिक औसत न्यूनतम तापमान दर्ज किया गया, जो 123 वर्षों में सबसे अधिक रहा। भारत के चार में से तीन क्षेत्रों उत्तर-पश्चिम, मध्य और दक्षिण प्रायद्वीपीय भारत में एक सदी में अक्तूबर माह में उच्चतम औसत न्यूनतम तापमान दर्ज किया गया।

वहीं, पूर्वी और पूर्वोत्तर भारत ने अपना तीसरा सबसे अधिक औसत न्यूनतम तापमान दर्ज किया। उत्तर-पश्चिम भारत में अक्तूबर में सबसे अधिक विसंगति दर्ज की गई, जबकि औसत न्यूनतम तापमान सामान्य से 2.25 डिग्री सेल्सियस अधिक था। समझना होगा कि इस

तरह असामान्य तपन के कुप्रभाव केरल में गत पांच वर्षों से कई प्राकृतिक आपदाओं के रूप में सामने आ रहे हैं। इस बार हिमाचली राज्यों में तो अक्तूबर-नवंबर और दिसंबर के पहले दो हफ्तों में एक बूंद पानी नहीं बरसा और इसका विपरीत असर जंगल, खेत, जानवर और इन्सानों पर दिख रहा है।

हमारी धरती को प्राकृतिक तौर पर सूर्य की किरणों से गरमी मिलती है। ये किरणें वायुमंडल से गुजरते हुए पृथ्वी की सतह से टकराती हैं और फिर वहीं से परावर्तित होकर लौट जाती हैं। धरती का वायुमंडल कई गैसों से मिलकर बना है, जिनमें कुछ ग्रीनहाउस गैसें भी शामिल हैं। इनमें से ज्यादातर धरती के ऊपर एक प्राकृतिक आवरण बना लेती हैं। यह आवरण लौटती किरणों के एक हिस्से को रोक लेता है और इस तरह धरती को गरम बनाए रखता है। इन्सानों, दूसरे प्राणियों और पौधों को जीवित रहने के लिए कम से कम 16 डिग्री सेल्सियस तापमान की जरूरत होती है। ग्रीनहाउस गैसों में बढ़ोतरी होने पर यह आवरण और भी मोटा होता जाता है। ऐसे में, यह आवरण सूर्य की ज्यादा किरणों को रोकने लगता है और इससे धरती का परिवेश जरूरत से अधिक गरम हो जाता है।

वैज्ञानिकों के अनुसार, इन गैसों का उत्सर्जन अगर इसी प्रकार चलता रहा तो 21वीं शताब्दी में पृथ्वी का तापमान 3 से 8 डिग्री तक बढ़ सकता है। विश्व के कई हिस्सों में बिछी बर्फ गल जाएगी, इससे जल का आगमन बढ़ेगा और समुद्र का जलस्तर कई फुट ऊपर तक बढ़ जाएगा। समुद्र के इस बर्ताव से विश्व के कई हिस्से जलमग्न हो जाएंगे। औद्योगीकरण के साथ ही सौ सालों के दौरान सन 1900 से 2000 तक पृथ्वी का औसत तापमान एक डिग्री फैरेनहाइट बढ़ गया है। सन 1970 के मुकाबले आज धरती का तापमान तीन गुणा तेजी से बढ़ रहा है। इस बढ़ती वैश्विक गर्मी का असल कारण इन्सान व उसकी भौतिक सुविधाओं की जरूरतें ही हैं। ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन, गाड़ियों से निकलने वाला धुआं और जंगलों में लगने वाली आग इसकी मुख्य वजहें हैं। इसके अलावा, घरों में लग्जरी वस्तुएं मसलन एयरकंडीशनर, रेफ्रिजरेटर, ओवन आदि भी इस गर्मी को बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। बिजली घर से 21.3 प्रतिशत, कारखानों से 16.8 , यातायात और वाहनों से-14, खेती के उत्पादों से 12.5, जीवाश्म ईंधन से 11.3, आवासीय क्षेत्रों से 10.3, खेतों से निकले बॉयोमॉस जलने से 10 और कचरा जलाने से 3.4 प्रतिशत ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन होता है।

सन 2018 के आर्थिक सर्वेक्षण में ही यह बात कह दी गई थी कि धरती का तापमान अधिक होने पर हमारी खेती-किसानी ध्वस्त हो सकती है। यदि तापमान एक डिग्री-सेल्सियस बढ़ता है, तो खरीफ मौसम के दौरान किसानों की आय 6.2 फीसदी कम कर देता है और असिंचित जिलों में रबी मौसम के दौरान 6 फीसदी की कमी करता है। इसी तरह बारिश में औसतन 100 मिमी की कमी होने पर किसानों की आय में 15 फीसदी और रबी के मौसम में 7 फीसदी की गिरावट होती है। साथ ही कई बीमारियां भी बढ़ती हैं।

यह बात भी डराने वाली है कि वैज्ञानिकों के मुताबिक, इस समय विश्व का औसत तापमान 15 डिग्री सेंटीग्रेड है और वर्ष 2100 तक इसमें डेढ़ से छह डिग्री तक की वृद्धि हो सकती है। एक चेतावनी यह भी है कि यदि ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन तत्काल बहुत कम कर दिया जाए, तो भी तापमान में वृद्धि तत्काल रुकने की संभावना नहीं है। वैज्ञानिकों का कहना है कि पर्यावरण और पानी की बड़ी इकाइयों को इस परिवर्तन के हिसाब से बदलने में भी सैकड़ों साल लग जाएंगे। अब यह इन्सान पर निर्भर है कि अपनी आगामी पीढ़ियों को बेहतर धरती देने के लिए वह किस तरह अपनी लिप्सा और भौतिक सुखों की चाहत के बनिस्पत स्वस्थ्य पर्यावरण को महत्व देता है।